पाठ 14

भविष्य का भय

(प्रस्तुत कहानी में साधन सम्पन्न परिवार की एक छोटी लड़की के माध्यम से निर्धन एवं असहाय बच्चों के प्रति संवेदना जागृत करने की चेष्टा की गयी है।)

स्कूल से लौटकर आज तुलतुल ने न तो खाना ही खाया और न पार्क में खेलने गयी। मुँह फुलाकर, चुपचाप छत की सीढ़ियों वाले दरवाजे के पास बैठ गयी। इस समय यहाँ कोई नहीं आता, इसीलिए गुस्से, दु:ख और अपमान से आहत होकर तुलतुल यहीं दौड़ी आयी थी। किताब का थैला रख ही रही थी कि दादी माँ बोल पड़ीं, 'लो आ गयी बहादुर लड़की! और बहादुरी का फल भी देख लो। खैर तुम्हारा क्या? भोगना तो हम लोगों को है।'

तुरन्त माँ बोल उठी, 'हम क्यों भोगने जाएं? जिसको बहादुरी का फल मिला है वही भोगे। आज से तुलतुल बरतन धोयेगी, झाड़ू-पोंछा करेगी, मसाला पीसेगी। इसी के कारण तो टुनी की माँ काम छोड़कर भाग गयी है।'

भैया ने भी साथ नहीं दिया बल्कि माँ की हाँ में हाँ मिलाकर बोला, 'माँ ठीक कह रही हैं। इसके लिए यही उचित है।'

'हाँ, सभी तुलतुल को ही दोष दे रहे हैं, उसी से तंग आकर टुनी की माँ नौकरी छोड़कर चली गयी है।'

माँ मेज पर खाना लगा रही थीं और बोलती भी जा रही थीं, 'खाना खाकर बदन में ताकत लाओ फिर काम में जुट जाओ, तुलतुल! जब किसी का कहा कुछ सुनोगी नहीं तो और

क्या होगा?'

लेकिन क्या तुलतुल ऐसा खाना खायेगी?

तुलतुल ने स्कूल की यूनिफार्म भी नहीं उतारी, बस तीर की भाँति छत की सीढ़ी पर जाकर बैठ गयी। पहले तो उसे थोड़ा रोना आया। स्कूल से लौटते ही इतनी भूख लगती है। पर तुलतुल रोयी नहीं, बल्कि यही सोच रही थी कि महरी को उसने किस तरह से तंग किया था। कल स्कूल से लौटते ही महरी को उसने सिर्फ इतना ही तो कहा, 'ओ टुनी की माँ। इतनी ठंड में टुनी को सिर्फ फ्राॅक पहनायी है और उस पर उससे चाय के बरतन धुलवा रही है?'

टुनी की माँ बोली थी, 'हर रोज थोड़े ही धोती है। जल्दी के समय बस थोड़ा हाथ भर बँटा देती है।'

तुलतुल कहने लगी, वाह! क्या खूब कही तुमने? तुम कैसी माँ हो? यह भी नहीं जानती कि 'अन्तरराष्ट्रीय बालवर्ष' है!

और फिर टुनी की माँ की आश्चर्य से भरी आँखों को देखकर तुलतुल बोली, 'उफ! तुम तो इस बात के माने ही नहीं समझोगी। सुनो, हमारी मिस ने कहा है।'

टुनी की माँ हाथ का काम छोड़कर बोली, 'किसने कहा है?'

'अरे बाबा हमारी स्कूल की मास्टर दीदी, समझी कुछ? उन्होंने कहा है, यह जो नया साल चल रहा है, यह साल छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों का है। इस साल छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की ज्यादा देखभाल करनी होगी और उन्हें प्यार करना पड़ेगा। अच्छा-अच्छा खाना देना होगा, अच्छे-अच्छे कपड़े और जूते पहनने के लिए देने होंगे, उन्हें पढ़ना-लिखना होगा, बच्चे बीमार न पड़ें उसका भी ख्याल रखना होगा, बच्चों से कोई काम नहीं करवाया जायेगा। बात समझ में आयी?'

टुनी की माँ थोड़ा हँसकर बोली, 'आयी समझ में।' और फिर अपनी लड़की से कहा,

‘मुँह फाड़े बात निगलने की जरूरत नहीं है, जल्दी-जल्दी हाथ चला।’

तुलतुल ने गुस्से के मारे कहा, ‘खाक समझी है। खबरदार टुनी, जो तुमने फिर पानी छुआ। इतनी ठंड है और उससे भी अधिक ठंडे पानी में हाथ डुबोकर चाय के बरतन धो रही है। कह रही हूँ छोड़ दे।’

तुलतुल की मिस ने कहा, ‘हमारे घरों में जो काम करने आते हैं यानी जो बरतन माँजते हैं, कपड़े धोते हैं, झाड़ू-पांेछा करते हैं, उनके बच्चों को ही यदि हम सिर्फ थोड़े प्यार की आँखों से देखें, अगर कोशिश करें कि वे भी थोड़ा अच्छा खा लें, सरदी के दिनों में पूरा बदन ढँकने का कपड़ा मिल जाय, पढ़ने-लिखने की सुविधाएँ दी जायँ, बीमारी में दवा मिल जाय तो लगेगा दुनिया में हमने कुछ अच्छा काम किया है। हालाँकि तुम सभी अभी बच्चे ही हो फिर भी अभी से सोचना सीखो- कैसे दुनिया में किसी के काम आओगे। एक बात ध्यान में रखना, दुनिया में सभी आदमी बराबर हैं। सभी छोटे बच्चों को प्यार पाने और देखभाल किये जाने का अधिकार है।’

तो फिर मिस के कहे अनुसार क्या तुलतुल कोशिश भी नहीं करेगी और फिर टुनी तो तुलतुल से भी छोटी है। दुबली-पतली हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखती है, ऐसी टुनी ठंडे पानी से बरतन धोएगी और तुलतुल गरम पानी से हाथ-मुँह धोकर गरम कपड़े पहनकर गरम-गरम पूरियाँ खायेगी?

रोज-रोज ऐसा ही होता था, यह सच है पर अब तुलतुल बड़ों को ऐसी भूल नहीं करने देगी। आज तुलतुल समझ गयी है कि ऐसा करना बहुत खराब बात है। अंतरराष्ट्रीय बालवर्ष में टुनी जैसे बेचारे बच्चों की देखभाल होनी ही चाहिए।

इसीलिए तो तुलतुल चिल्लाकर बोली, ‘माँ नाश्ता दो..... और फिर टुनी से कहा, ‘ऐ टुनी, मेरे साथ चल, पूरियाँ खायेंगे।’ सुनकर माँ वहीं से बोली, ‘ओह तुलतुल! तू बेमतलब में देर क्यों कर रही है?’

‘पूरियाँ उसे भी दूँगी। पहले तू खा।’

‘क्यों, पहले मैं खाऊँगी?’

‘तू अभी-अभी स्कूल से आयी है। अच्छा टुनी को भी पूरियाँ दे रही हूँ, तू तो बैठ।’

टुनी की माँ तुलतुल से बोली, ‘जाओ मुन्नी। देर करने पर माँ डाँटेंगी। आज क्या तुम्हें भूख नहीं लगी है..... टुनी तू तब तक कोयला तोड़ दे, सुबह के लिए चूल्हा तैयार कर छोड़ूँ।

फिर क्या था तुलतुल ने टुनी के हाथ से कोयला तोड़ने का हथौड़ा छीनकर फेंक दिया और बोली, ‘माँ की बात कभी मत सुनना। यह बालवर्ष है, समझी! बालवर्ष में बच्चों को काम करना मना है..... आज से तू डिपो से दूध लेने नहीं जायेगी। माँ के साथ सड़क से सड़ा हुआ गोबर नहीं उठायेगी। बात समझ में आ रही है न! दिमाग में कुछ घुसा!’

तुलतुल की इतनी बातों के जवाब में टुनी डरी-डरी सी बोली, ‘हथौड़ा लौटा दो दीदी! नहीं तो माँ मुझे बहुत डाँटेंगी।’

‘डाँटने तो दो। मिस से कह दूँगी। मजा चखा देंगी। तू अब भी क्यों खड़ी है? आ न मेरे साथ।’

इतना कहकर टुनी का हाथ पकड़कर तुलतुल उसे खींचती हुई खाने की मेज पर लायी। कुछ लगा नहीं था पर बेवकूफ लड़की रोने लगी। असल में वह डाँट के डर से रो पड़ी थी। तुलतुल क्या यह समझ नहीं रही थी?

उसकी माँ जल्दी-जल्दी सन्देश के खाली बक्से में चार-पाँच पूरियाँ थोड़ी-सी आलू की सूखी सब्जी और थोड़ा-सा गुड़ रखकर बोली, ‘जा टुनी, माँ के पास जाकर खा ले।’

टुनी जान बचाकर भागी।

तुलतुल ने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि कल से अगर माँ ने टुनी को भी एक जैसा खाना नहीं दिया तो तुलतुल भी खाना नहीं खायेगी। उसने माँ से कह भी दिया। बोली, ‘मैं तो अच्छी भली मोटी हूँ, फिर भी इतना खाना देती हो और टुनी चिड़िया जैसी है उसे कुछ नहीं देती। जानती नहीं माँ, यह बालवर्ष है?’

माँ बोली, ‘जानती हूँ। ज्यादा बक-बक मत कर। लड़की के सर पर तो भूत सवार हुआ है।’

लेकिन भूत जमकर बैठ गया हो तो कोई चारा भी नहीं है।

खाना खाने के बाद तुलतुल ने देखा टुनी और उसकी माँ घर जा रही हैं। तुलतुल ने डाँटकर नहीं, अच्छी तरह से कहा, 'कल से टुनी यह सब काम नहीं करेगी। कल पापा तुझे स्कूल में दाखिला करवा देंगे।'

क्या यह टुनी की माँ को तंग करना हुआ?

तुलतुल ने जाकर अपने पापा से सारी बातें कहीं। पापा सुनकर बोले, 'सच में दाखिला करवाना चाहिए और आजकल तो स्कूल में फीस भी नहीं देनी पड़ती। किताब-कॉपी सब मुफ्त मिलते हैं। टिफिन में खाना भी मुफ्त मिलता है।'

'सच पापा?'

'हाँ, मुन्नी, बिलकुल सच। यह नियम हो गया है।'

'तो फिर टुनी हिसाब हल कर पायेगी?'

'क्यों नहीं। सीखने पर जरूर कर सकेगी।'

'किताब पढ़ सकेगी, पापा?'

'जरूर पढ़ सकेगी। कल सुबह जैसे ही वे लोग आयेंगे टुनी को पकड़कर स्कूल में बैठा आऊँगा।'

तुलतुल खुशी के मारे झूम उठी।

अहा! कल बड़ा मजा आयेगा।

स्कूल में पहुँचते, तुलतुल मिस को जाकर कहेगी, 'मिस, मैंने आपका कहना माना है। हमारे घर में जो काम करती है उसकी लड़की को.....ही-ही.....स्कूल में ही.....।'

ही-ही तो तुलतुल ने यहीं कर लिया। स्कूल में मिस के सामने यह सब नहीं चलेगा। स्कूल में गम्भीर, ृान्त, सभ्य ढंग से बात करनी पड़ती है।

रात में सोते समय तुलतुल का मन बड़ा खुश था। सोते समय उसने माँ को निदर्श दिया, 'कल मेरे साथ-साथ टुनी को भी खाना दे देना। माँ! टुनी को भी अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए देना। समझी न माँ।'

माँ नाराज होकर बोली, 'सब समझ गयी। तार-तार समझ गयी। अब, जरा बकना बन्द कर और कृपा करके सो जा।'

तुलतुल तुरन्त सो गयी।

ओ माँ! सुबह उठकर तुलतुल ने देखा यह क्या? यह सुबह तो रोज की तरह सुबह है। पापा को उन्हें ले जाने की कोई जल्दी ही नहीं है। पापा घर पर ही नहीं थे और टुनी ज्यों की त्यों फटी फ्राॅक पहनकर चाय के ढेर सारे बरतन धो रही थी।

तुलतुल नल के नीचे से टुनी को खींचकर बोली, 'कल क्या कहा था?' टुनी बेवकूफ की तरह अपनी माँ को देख रही थी। टुनी की माँ बोली, 'मुन्नी को क्या हो गया है? दिमाग फिर गया है क्या?'

तुलतुल सीधे दुमंजिले पर पहुँची और कल ृाम माँ से जो कपड़े लिये थे उन्हें लाकर टुनी को पहनने का हुक्म दिया और बोली, 'पापा के लौटते ही स्कूल जायेंगे, समझी और उसके पहले तू मेरे साथ खाना खायेगी। याद रहेगा?'

क्या इसे टुनी की माँ को तंग करना कहा जायेगा?

उसे तो उस समय स्कूल जाने के लिए नहीं कहा था!

खाना खाते समय टुनी को देखकर तुलतुल चिल्लाकर उसे पुकारने लगी। दादी माँ बोली, 'टुनी अपने पापा से पूछने गयी है।'

'क्या पूछने गयी है?'

‘वह, स्कूल जायेगी या नहीं, यह अपने पापा से नहीं पूछेगी क्या? तुम्हारे कहने से ही होगा? टुनी की माँ इसलिए बरतन छोड़कर लड़की को लेकर घर पूछने गयी है।’

दादी माँ की बात तो थोड़ी-थोड़ी ठीक लगती है, पर तुलतुल को थोड़ा डर भी है।

टुनी के पापा कहीं उसे स्कूल जाने से मना न कर दें। इन लोगों का कोई भरोसा नहीं। अभी-अभी तो टुनी की माँ बोली थी कि पढ़ने-लिखने से गरीब आदमी का काम चलेगा कैसे?

‘फीस नहीं लगेगी, किताब के पैसे नहीं लगेंगे यह सुनकर भी टुनी की माँ चुप रही।’ यह बात घर जाकर वह जरूर कहेगी।

तुलतुल जब जूते-मोजे पहन रही थी, पापा बाजार से लौट आये। तुलतुल बोली ‘ओह पापा, आप बड़े डेंजरस हैं। (यह बात वैसे अक्सर पापा ही तुलतुल को कहते हंै।) इतनी देर कर दी आपने? टुनी भी देर कर रही है। उसके आते ही उसे स्कूल में लेकर आ जाइएगा। यहीं पास के स्कूल में भर्ती करवा दीजिएगा। वहाँ बिना जूते-मोजे पहने भी घुसने देते हैं, पापा। टुनी बेचारी के पास तो कुछ भी नहीं है। जब वह पास कर जायेगी, आप उसे जूते-मोजे खरीदकर देंगे न पापा? उसके पापा के पास ज्यादा रुपये नहीं हैं इसलिए नहीं दे सकते। आप तो देंगे न पापा?’

फिर पापा का जवाब सुनने से पहले ही स्कूल की बस आ गयी थी और अब शाम को बस से उतरते ही उसे यह सुनना पड़ा कि टुनी की माँ ने तुलतुल की हरकतों से तंग आकर काम छोड़ दिया है। सुबह जो अधमँजे बरतन को छोड़कर चली गयी थी, फिर वापस नहीं लौटी। पड़ोस के घर की सुखदा भी उसी मुहल्ले की है। माँ ने उसे भेजा था पर टुनी की माँ ने कहलवा दिया कि वह अब काम नहीं करेगी।

इसके माने टुनी की माँ का पापा से पूछने जाना एक बहाना था। बकवास था। वह स्कूल के डर से भाग गयी। ताज्जुब है! कितनी बेवकूफ है वह!

घर के जो बड़े लोग हैं, उनमें से कोई तो टुनी की माँ को दोष नहीं दे रहा है। सभी तुलतुल की बेवकूफी की बात कर रहे हैं और ये लोग सभी पढ़े-लिखे लोग हैं! लोग तो जानते हैं

‘बालवर्ष’ में क्या-क्या करना चाहिए। रोज तो अखबार पढ़ते हैं।

असल में बड़ों को समझा ही नहीं जा सकता। बड़े लोग कभी कुछ बोलते हैं तो कभी कुछ। उनके सभी काम बड़े उलटे किस्म के हैं।

उस बार की तो बात है। तुलतुल जलपाईगुड़ी में नाना के घर गयी थी। नानाजी ने तुलतुल को ‘दया के सागर विद्यासागर’ पुस्तक खरीद कर दी। उस समय वे क्या बोले थे?

‘महान व्यक्तियों की जीवनी पढ़, तुलतुल! जितना हो सके, ऐसी किताबें पढ़ना, समझी? पढ़ना और इनके आदर्शों पर चलना।’

ओह माँ! उसके कई दिनों बाद की बात है। जलपाईगुड़ी में बड़ी ठंड पड़ी थी। एक गरीब लड़का कोई पुराना कपड़ा माँग रहा था। तुलतुल ने अपना पहना हुआ कार्डिगन खोलकर उसे दे दिया। बाप रे बाप! नानाजी ने ऐसी डाँट लगायी कि क्या कहना! पागल, सिरफिरी लड़की, कहकर नानाजी और भी कुछ बड़बड़ाने लगे। क्यों? विद्यासागर क्या अपने शरीर के कपड़े उतार कर गरीबों को नहीं दे देते थे?

नानाजी बाद में हँसकर मजाक करते हुए बोले, ‘अब कान पकड़ता हूँ। किसी को विद्यासागर की जीवनी नहीं खरीद कर दूँगा। इतना कीमती ऊनी कार्डिगन इस लड़की ने सड़क के भिखारी को दे दिया?’

रास्ते के भिखारी को नहीं देगी तो क्या तुलतुल पैसे वालों के लड़के-लड़कियों को देगी? देन पर भी वे क्या लेंगे? और तुलतुल उन्हें देगी भी क्यों? उनके पास नहीं है क्या?

नीचे से भैया की आवाज सुनायी दी, ‘ऐ तुलतुल, खाना खाने आ न, छत पर क्यों बैठी है?’

तुलतुल का मन डोल उठा। पेट में चूहे कूद रहे थे फिर भी तुलतुल कठोर बनी बैठी रही। इतने में ही वह हिम्मत हार जायेगी?....मिस ने यह भी कहा था, कितने बच्चों को दो बार भरपेट खाना भी नहीं मिलता.....।

भैया ने फिर पुकारकर कहा, "बरतन धोने के डर से नीचे नहीं उतर रही है, क्या? हा, हा, हा। ही, ही, ही। इतना डरने की जरूरत नहीं, तुम्हारा कसूर माफ कर दिया गया है...।"

तुलतुल ने भी चिल्लाकर बोलना चाहा, 'दंड किस चीज का? मैंने क्या कोई गलती की है?' पर वह कुछ बोल नहीं पायी। उसकी आवाज रुँध गयी। अब दादी माँ ने पुकारा, पूरियाँ ठंडी पड़ रही हैं।'

तुलतुल मुँह कठोर बनाकर वैसी ही बैठी रही।

इसके बाद ही माँ आयी।

'यह क्या नखरा हो रहा है? तुम्हें क्या सचमुच ही बरतन माँजने और कपड़े धोने के लिए कहा गया है? सर्दी के दिनों में काम का आदमी छूट जाय तो कैसा लगता है, तू क्या समझेगी? कोई तुम्हें बेमतलब डँाटना थोड़े ही चाहता है? ले अब, चल उठ। खाना खा ले। ज्यादा नखरे की जरूरत नहीं।'

तुलतुल गुस्से में ही बोली, 'मैं नहीं जाती, जाओ। मैं नहीं जाऊँगी।'

'ठीक है। आने दो तुम्हारे पापा को, लाडली बेटी को इतना प्यार करने का मजा भी वे देख लें'। बेटी की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाकर बोले, 'हाँ-हाँ' टुनी को स्कूल में दाखिला दिला देना अच्छा रहेगा।' पर तू ही सोच टुनी अगर स्कूल जाने लगेगी तो उसकी माँ का कैसे गुजारा होगा? टुनी कितना हाथ बँटाती है।'

तुलतुल के गले में दुगनी ताकत थी। झटक कर बोली, 'यही तो खराब है। मिस ने कहा है, छोटे-छोटे बच्चों से काम कराना बहुत बड़ा पाप है। समझी? तुम सभी पापी हो।' पर माँ इस भयंकर बात को सुनकर भी नहीं घबरायी। बल्कि हँसकर बोली, 'क्या करूँ, तू बोल? पापी संसार में जन्म लिया है, पापी बनकर रह रही हूँ। इस दुनिया को नये सिरे से बदलने की क्षमता तो मेरी है नहीं और अगर ऐसा न किया जाये तो इस संसार का उद्धार भी नहीं होने का। तू जब बड़ी होगी तो इसे बदल डालना। तू और तेरे दोस्त सभी मिलकर। हम लोगों की तरह का पाप, तुम लोग नहीं करना।'

इस बात से न जाने क्या हुआ।

अचानक तुलतुल बिलखकर रो उठी। माँ से लिपटकर बोली, 'अगर बड़ी होकर मैं भी तुम्हारी तरह उलट-पलट जाऊँ तो? अगर बेवकूफ बन जाऊँ तो? अगर यह भूल जाऊँ कि सभी लोग एक समान हैं।'

- आशापूर्णा देवी

कहानी से

1. स्कूल से लौटने पर तुलतुल मुँह फुलाकर क्यों बैठ गयी?

2. तुलतुल की माँ ने उसे घरेलू कार्य करने का आदेश क्यों दिया?

3. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जीवनी पढ़ने का तुलतुल पर क्या असर हुआ?

4. तुलतुल के मन में भविष्य के किस भय की चिन्ता थी?

5. टुनी की माँ टुनी को स्कूल क्यों नहीं भेजना चाहती थी और वह तुलतुल के घर की नौकरी छोड़कर क्यांे चली गयी?

6. 'अन्तरराष्ट्रीय बालवर्ष' के सन्दर्भ में 'मिस' के क्या विचार थे और 'मिस' के विचारों का तुलतुल पर क्या प्रभाव पड़ा?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए-

मुँह फुलाना, हाथ बँटाना, मजा चखाना, सर पर भूत सवार होना, कोई चारा न होना, दिमाग फिरना, पेट में चूहे कूदना।

2. इस पाठ में कई ृाब्द-युग्म आये हैं जो पुनरुक्त हैं, जैसे- कभी-कभी, डरी-डरी, गरम-गरम आदि। पाठ में आये हुए अन्य पुनरुक्त ृाब्दों को छाँटकर लिखिए।

3. इस पाठ में आये निम्नलिखित ृाब्दों को पढ़िए-

यूनिफार्म, फ्राॅक, हुक्म, माफ।

ये शब्द विदेशी भाषा से हिन्दी में आये हैं। पाठ से अन्य विदेशी शब्द चुनकर लिखिए।

4. पदों के मेल से बने हुए नये संक्षिप्त पद को 'समास' कहते हैं। जिस 'समास' में दोनों पद प्रधान होते हैं और उनके बीच में 'और' शब्द का लोप होता है, उसे 'द्वन्द्व समास' कहते हैं, जैसे- पढ़ना-लिखना अर्थात् पढ़ना और लिखना। नीचे लिखे शब्दों में समास विग्रह कीजिए-

झाड़ू-पोंछा, दुबली-पतली, हाथ-मुँह, लड़के-लड़कियाँ।